

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मोक्ष, सत्र 13, औचित्य, संख्या 2, ऐतिहासिक पुनर्ज्ञान और व्यवस्थित फॉर्मूलेशन

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मोक्ष पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 13, औचित्य, संख्या 2, ऐतिहासिक पुनरावलोकन और व्यवस्थित सूत्रीकरण है।

हम उद्धार के अपने अध्ययन को औचित्य के सिद्धान्त के साथ जारी रखते हैं।

निष्पक्ष होने के प्रयास में, मैं आधिकारिक रोमन कैथोलिक दस्तावेजों के साथ काम कर रहा हूँ। मुझे उम्मीद नहीं थी कि मेरा जोश इतना प्रबल होगा, लेकिन मैं सुसमाचार के लिए उत्साही हूँ। इसलिए, मुझे उम्मीद है कि मैं सम्मानजनक व्यवहार कर रहा हूँ, लेकिन मैं सुसमाचार के लिए उत्साही होने के लिए माफी नहीं माँगता।

यदि ट्रेट रोम का ऐतिहासिक कथन है, तो सुधारवादी सिद्धांतों के संदर्भ में, उन सिद्धांतों का खंडन, तथा औचित्य के संबंध में रोमन कैथोलिक सिद्धांतों का विस्तार और स्पष्टीकरण। 1992 में रोमन कैथोलिक चर्च का धर्मशिक्षा एक बहुत ही महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो 60 के दशक के मध्य में वेटिकन द्वितीय परिषद के कई परिणामों को लागू करता है, तथा 1992 में कैथोलिक चर्च के धर्मशिक्षा की लाखों प्रतियां दुनिया भर में मौजूद हैं। रोमन कैथोलिक चर्च ने ट्रेट की शिक्षाओं और अभिशापों को अस्वीकार नहीं किया है।

कैथोलिक चर्च का धर्मशिक्षा 1992 अपनी लोकप्रिय शैली के कारण ट्रेट जितना विस्तृत नहीं है। इस महत्वपूर्ण दस्तावेज को पोप जॉन पॉल द्वितीय ने प्रख्यापित किया था और कार्डिनल जोसेफ रत्ज़िंगर ने इसकी सराहना की थी, जो बाद में, रत्ज़िंगर, क्षमा करें, कार्डिनल जोसेफ रत्ज़िंगर, या बल्कि जोसेफ कार्डिनल रत्ज़िंगर सही होगा, मेरा मानना है, बाद में पोप बेनेडिक्ट XVI ने इसे अपनाया। प्रोटेस्टेंटों को औचित्य के संबंध में इसके साथ असहमति के कई बिंदु मिलते हैं।

धर्मशिक्षा के औचित्य का सिद्धांत ट्रेट की परिषद को प्रतिबिंबित करता है। अनुच्छेद ॥, अनुग्रह और औचित्य पर विचार करने से यह बात साबित होती है। मैं कैथोलिक चर्च के धर्मशिक्षा के पैराग्राफ नंबर का उल्लेख करूंगा।

यदि आप अधिकृत होना चाहते हैं, तो यह एक अधिकृत, रोमन कैथोलिक शिक्षण का अधिकृत कथन है, जो एक लोकप्रिय, लोकप्रिय रूप से व्यक्त, अपेक्षाकृत छोटे दायरे में है; यह एक महान स्रोत है। कुछ कथनों में ऐसी शिक्षाएँ हैं जिनसे हम सहमत हैं, जिनसे मैं सहमत हूँ, जैसे कि निम्नलिखित, बपतिस्मा और ईश्वर द्वारा हमें आंतरिक रूप से न्यायी बनाने के संदर्भों को छोड़कर। मसीह के जुनून, मसीह की पीड़ाओं के द्वारा हमारे लिए औचित्य प्राप्त हुआ है, जिन्होंने खुद को एक जीवित बलिदान के रूप में क्रूस पर चढ़ाया, पवित्र और ईश्वर को प्रसन्न करने वाला, और जिसका खून सभी मनुष्यों के पापों के लिए प्रायश्चित्त का साधन बन गया है।

बपतिस्मा में औचित्य प्रदान किया जाता है, जो विश्वास का संस्कार है। यह हमें परमेश्वर की धार्मिकता के अनुरूप बनाता है, जो हमें अपनी दया की शक्ति से आंतरिक रूप से न्यायपूर्ण बनाता है। इसका उद्देश्य परमेश्वर और मसीह की महिमा और अनन्त जीवन का उपहार है।

नोट्स में रोमियों 3:21 से 26 में टेंट की परिषद का हवाला दिया गया है। यह कैथोलिक चर्च के कैटेचिज़्म के पैराग्राफ 1992 में है। मुझे कहना चाहिए कि मैं न केवल इस धारणा से असहमत हूँ कि ईश्वर हमें आंतरिक रूप से न्यायी या धर्मी बनाता है, बल्कि इस तथ्य से भी असहमत हूँ कि औचित्य एक्स ऑपरे ऑपरेटो है, जो बपतिस्मा द्वारा स्वचालित रूप से प्रदान किया जाता है।

रोम की शिक्षा यह है कि इसके संस्कार अनुग्रह प्रदान करते हैं, जो कि किए गए कार्य द्वारा होता है। इसका अर्थ यह है कि एक कैथोलिक पादरी जिसे बिशप द्वारा नियुक्त किया जाता है, उसे कैथोलिक चर्च की ओर से ट्रिनिटी के नाम पर बपतिस्मा देने और मास के कथित बलिदान में मसीह को अर्पित करने का अधिकार प्राप्त होता है। कैटेचिज़्म आगे औचित्य को पवित्र आत्मा की शक्ति के रूप में परिभाषित करता है जो हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है और यीशु मसीह और बपतिस्मा में विश्वास के माध्यम से हमें ईश्वर की धार्मिकता का संचार करता है।

इसके बाद तीन बाइबिल उद्धरण दिए गए हैं, जिनमें से दो प्रगतिशील पवित्रीकरण के बारे में हैं। रोमियों 6:3 और 4, पद 8 और 11। अगला पैराग्राफ पाप के लिए मरने, नए जीवन के लिए जन्म लेने और मसीह के साथ एकता के बारे में है, जिनमें से कोई भी उचित औचित्य से संबंधित नहीं है।

टेंट के साथ सहमति में, कैटेचिज़्म सिखाता है कि औचित्य, उद्धरण, ईश्वर की कृपा और मनुष्य की स्वतंत्रता के बीच सहयोग स्थापित करता है, उद्धरण बंद करें। हम आत्मा की हमारी स्वतंत्र इच्छा को सक्षम किए बिना बचाए नहीं जा सकते, लेकिन हम ईश्वर के वचन के लिए हाँ या नहीं कहते हैं, पैराग्राफ 1993। कैटेचिज़्म टेंट से आगे निकल जाता है जब यह लोगों के दिव्य बनने की बात करता है, और सबूत के तौर पर, देवत्व पर अथानासियस का हवाला देता है, पैराग्राफ 1987, 1988।

पवित्र आत्मा की कृपा का पहला कार्य रूपांतरण है, एक करीबी उद्धरण, जिसे इस प्रकार परिभाषित किया गया है कि जब अनुग्रह से प्रेरित होकर मनुष्य ईश्वर की ओर मुड़ता है और पाप से दूर होता है, इस प्रकार वह ऊपर से क्षमा और धार्मिकता को स्वीकार करता है। टेंट से एक उद्धरण आता है, उद्धरण; औचित्य केवल पापों की क्षमा ही नहीं है, बल्कि आंतरिक व्यक्ति का पवित्रीकरण और नवीनीकरण भी है, करीबी उद्धरण। एक बार फिर, कैटेचिज़्म औचित्य में प्रगतिशील पवित्रीकरण को शामिल करता है; उद्धरण, औचित्य क्षमा प्रदान करने की ईश्वर की दयालु पहल का अनुसरण करता है।

यह मनुष्य को परमेश्वर के साथ मिलाता है। यह पाप की गुलामी से मुक्त करता है, और यह चंगा करता है पैराग्राफ 1989, 1990। फिर से, उद्धरण, पवित्र आत्मा आंतरिक जीवन का स्वामी है।

आंतरिक मनुष्य को जन्म देकर, औचित्य उसके पूरे अस्तित्व के पवित्रीकरण को दर्शाता है, उद्धरण बंद करें, पैराग्राफ 1995। इस धर्मशिक्षा में प्रगतिशील पवित्रीकरण और औचित्य के बीच एक जबरदस्त भ्रम है, जो फिर से रोमन कैथोलिक चर्च के लोगों को एक अच्छा कैथोलिक बनकर भगवान की कृपा और स्वीकृति पाने की ओर ले जाएगा, जो भगवान की कृपा और स्वीकृति पाने का तरीका नहीं है, चाहे कोई अच्छा कैथोलिक या अच्छा प्रोटेस्टेंट या कुछ और बनने की कोशिश करे। यह प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करके होता है।

और फिर, हाँ, हम उसे प्रसन्न करना चाहते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करना चाहते हैं और उसकी इच्छा पूरी करना चाहते हैं। रोम के विचार नहीं बदले हैं, इसकी पुष्टि राहनर, कार्ल राहनर और वोरग्रिमलर के धर्मशास्त्र के शब्दकोश, 1981 द्वारा की गई है। यह उपकरण ट्रेंट की परिषद के समान शब्दों में औचित्य को परिभाषित करता है।

उद्धरण: औचित्य वह घटना है जिसमें ईश्वर, अपने प्रेम के एक स्वतंत्र कार्य द्वारा, मनुष्य को अपने साथ उस रिश्ते में लाता है जिसकी एक पवित्र ईश्वर मनुष्य से मांग करता है। वह विश्वास के वचन और संस्कारों के संकेतों के माध्यम से मनुष्य को अपने दिव्य स्वभाव का हिस्सा देकर ऐसा करता है। यह न्याय, या धार्मिकता, जो केवल न्यायिक या फोरेंसिक फैशन में आरोपित नहीं होती है, बल्कि मनुष्य को वास्तव में न्यायपूर्ण बनाती है, उसी समय पापों की क्षमा भी है।

किसी भी व्यक्ति के लिए उद्धार की कोई निश्चितता नहीं हो सकती। यह न्याय, धार्मिकता, ईश्वर द्वारा दी गई और प्राप्त की गई, भी खो सकती है यदि कोई व्यक्ति गंभीर पाप करके ईश्वरीय प्रेम को अस्वीकार करता है। मनुष्य औचित्य को बनाए रख सकता है और उसे निरंतर बढ़ा भी सकता है।

इनमें से कई विचार ट्रेंट की परिषद की आधुनिक रूप से व्यक्त शिक्षाएँ हैं। मैं इस पर और अधिक विस्तार से चर्चा नहीं करूँगा; शायद इस पर पर्याप्त चर्चा हो चुकी है। मैं औचित्य प्रस्तुति और धर्मशास्त्रीय प्रस्तुति में भी इसका उत्तर दूँगा।

सुधार और औचित्य। 16वीं शताब्दी का प्रोटेस्टेंट सुधार मुख्य रूप से एक धार्मिक आंदोलन था, हालांकि इसका राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी प्रभाव पड़ा। सुधारकों ने मोक्ष के संदेश की पुनः खोज पर ध्यान केंद्रित किया।

एकरूपता से दूर, सुधार ने लूथरन, कैल्विनिस्ट, एंग्लिकन और एनाबैप्टिस्ट चर्चों के साथ-साथ प्रोटेस्टेंटवाद की प्रतिक्रिया में रोमन कैथोलिक काउंटर-रिफॉर्मेशन को जन्म दिया। फिर भी, कई सुधार चर्चों ने एकजुट होकर सुसमाचार को अपनाया। सुधार चर्च सुसमाचार पर सहमत थे क्योंकि वे सोला स्क्रिप्टुरा पर कायम थे।

धर्मशास्त्र और नैतिकता के लिए सिर्फ बाइबल ही मुख्य अधिकार है। यह पाँच सुधारवादी सोलास में से पहला था, अन्य सोला फ़ाइडेई थे; उद्धार सिर्फ मसीह में विश्वास के ज़रिए होता है, अच्छे कामों से नहीं। सोला ग्रैटिया, हम सिर्फ ईश्वर की कृपा से ही बचाए जाते हैं।

सोलस क्रिस्टस, ईश्वर और मानवता के बीच एकमात्र मध्यस्थ केवल मसीह ही है, और सोली देओ ग्लोरिया; सारी महिमा केवल ईश्वर की है। सोला स्क्रिप्टुरा, बाइबल हमारा अंतिम मानदंड है, जो अन्य मानदंडों का न्याय करता है। सोला फ़ाइडेई, मुक्ति केवल विश्वास से होती है, विश्वास और कर्म से नहीं।

सोला ग्रेटिया, मोक्ष केवल ईश्वर की कृपा से है। सोलस क्राइस्टस, मसीह ही एकमात्र मध्यस्थ है, और सोली देओ ग्लोरिया, सारी महिमा केवल ईश्वर की है। व्यावहारिक रूप से, सोला स्क्रिप्टुरा का मतलब था कि सुधारकों ने रोम के इस दृष्टिकोण को अस्वीकार कर दिया कि पवित्र शास्त्र और पवित्र परंपरा समान रूप से आधिकारिक थे।

इसके बजाय, सोला स्क्रिप्टुरा ने धर्मग्रंथ को सिद्धांत और ईसाई जीवन के लिए सर्वोच्च स्थान पर रखा। एक उदाहरण के तौर पर, कैल्विन ने तर्क, परंपरा और अनुभव के अधिकार को स्वीकार किया, लेकिन जानबूझकर और लगातार इन कमतर अधिकारियों पर शास्त्र को रखने की कोशिश की, उन पर निर्णय लेते हुए। सोला स्क्रिप्टुरा को मोक्ष पर लागू करते हुए, लूथर ने बाइबल के केंद्रीय संदेश को मुफ्त औचित्य के रूप में समझा, जो केवल मसीह में विश्वास द्वारा प्राप्त होता है, जिसके परिणामस्वरूप पापों की क्षमा होती है।

प्रमुख सुधारकों ने लूथर के औचित्य के सिद्धांत को स्वीकार किया और औचित्य के मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक सिद्धांत का कड़ा विरोध किया। हालाँकि रोम की शिक्षा ईश्वर के पूर्ववर्ती अनुग्रह से शुरू हुई, लेकिन इस अनुग्रह ने पापियों की स्वतंत्र इच्छा को मसीह में विश्वास करने और अच्छे कार्य करने में सक्षम बनाया जो अनंत जीवन के योग्य हैं। कैथोलिक चर्च ने सिखाया कि औचित्य फोरेंसिक नहीं है, जिसके द्वारा ईश्वर मसीह में पापियों को धर्मी घोषित करता है।

बल्कि, यह परिवर्तनकारी या परिवर्तनकारी है, एक ऐसी प्रक्रिया की शुरुआत है जो अंतिम मोक्ष की ओर ले जा सकती है। इस प्रकार, रोम मोक्ष को ईश्वर और मनुष्यों के बीच एक तालमेल के रूप में मानता है। इसके विपरीत, सुधारकों ने एक मोनेरजिस्टिक मोक्ष को माना, जिसमें केवल ईश्वर ही पापियों को शुरू से अंत तक बचाता है।

इसके अलावा, रोमन चर्च ने सिखाया कि केवल चर्च ही ईश्वर की उद्धारक कृपा का स्रोत है, जो बपतिस्मा, प्रायश्चित और यूचरिस्ट जैसे संस्कारों के माध्यम से वितरित की जाती है। लूथर ने इस दृष्टिकोण पर आपत्ति जताई और ईश्वर की मुफ्त कृपा की खुशखबरी का बचाव करने और उसका प्रचार करने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया। लूथर और उनके साथी सुधारकों का मानना था कि औचित्य ईश्वर द्वारा विश्वासियों पर उद्धार लागू करने की एक न्यायिक तस्वीर है।

यह फोरेंसिक है, परिवर्तनकारी नहीं। यह एक घोषणात्मक कार्य है, न कि आजीवन प्रक्रिया। औचित्य में, परमेश्वर एक बार और हमेशा के लिए धर्मी घोषित करता है और यीशु में हर विश्वासी को क्षमा करता है।

पौलुस ज़ोर देकर सिखाता है कि धर्मी ठहराए जाने का अधिकार विश्वास से मिलता है, न कि विश्वास और कामों से। हम जानते हैं कि एक व्यक्ति व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहराया जाता

है, गलातियों 2:16, बल्कि यीशु मसीह में विश्वास से। यहाँ तक कि हमने भी मसीह यीशु में विश्वास किया है।

ऐसा इसलिए किया गया था ताकि हम मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरें न कि व्यवस्था के कामों के द्वारा, क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं ठहरेगा, गलातियों 2:16। धर्मी ठहराए जाने से पापियों का भीतरी शुद्धिकरण नहीं होता और वे अच्छे काम करने में सक्षम नहीं होते। जब परमेश्वर किसी पापी को धर्मी ठहराता है, तो वह लूथर की प्रसिद्ध अभिव्यक्ति का उपयोग करने के लिए सिमुल जस्टस एट पेकेटर बन जाता है। एक ही समय में, धर्मी और पापी, सिमुल, एक ही समय में, हम उससे एक साथ मिलते हैं, जस्टस, न्यायी या धर्मी, एट और पेकेटर, एक ही समय में, धर्मी और पापी।

न्यायकर्ता परमेश्वर मसीह में विश्वासियों को धर्मी घोषित करता है, और इसलिए वे परमेश्वर की दृष्टि में हैं। साथ ही, अपने आप में देखा जाए तो वे अभी भी पापी हैं। रोम द्वारा लूथर के सिद्धांत की निंदा करना कि यह स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है, लक्ष्य से चूक जाता है।

हालाँकि औचित्य परिवर्तनकारी नहीं है, यह उद्धार के अनुप्रयोग के अन्य पहलुओं के साथ सहसंबंधी या अविभाज्य है जो परिवर्तनकारी हैं। परमेश्वर द्वारा पापियों को न्यायोचित ठहराना उनके पुनर्जन्म और पवित्रीकरण से अविभाज्य है। पुनर्जन्म में, परमेश्वर पापियों को नया जीवन देता है, जो उनके सुसमाचार पर विश्वास करने, साथी विश्वासियों से प्रेम करने और ईश्वरीय जीवन जीने में देखा जाता है, जैसा कि 1 यूहन्ना प्रमाणित करता है।

प्रगतिशील पवित्रीकरण में, परमेश्वर विश्वासियों को अनुग्रह में बढ़ने, मसीह के ज्ञान में बढ़ने और व्यावहारिक पवित्रता में बढ़ने में सक्षम बनाता है। रोम द्वारा प्रगतिशील पवित्रीकरण के साथ औचित्य को भ्रमित करना एक गंभीर त्रुटि है, क्योंकि इसका परिणाम यह होता है कि अच्छे ईसाई, उद्धारण चिह्नों में, परमेश्वर के लिए जीकर उद्धार प्राप्त करने या बनाए रखने की कोशिश करते हैं। जैसा कि सुधारकों ने पहचाना, पौलुस ने औचित्य के लिए परमेश्वर के उद्धारक अनुग्रह और मसीह में विश्वास को अविभाज्य रूप से जोड़ा।

उद्धारण, यही कारण है कि वादा विश्वास से है, पॉल ने रोमियों 4:16 में लिखा है, ताकि यह अनुग्रह के अनुसार हो, ताकि सभी वंशजों को इसकी गारंटी मिल सके, जो अब्राहम के विश्वास के हैं। योग्यता धर्मशास्त्र, यह धारणा कि मनुष्य ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं, हालाँकि पूर्ववर्ती अनुग्रह और इसी तरह से घिरे हुए हैं, असंभव है, क्योंकि यह ईश्वर के अनुग्रह को अलग रखता है। उद्धारण, क्योंकि यदि धार्मिकता व्यवस्था के माध्यम से आती है, तो मसीह व्यर्थ मर गया।

गलातियों 2:21. मैं इसे ESV से पढ़ना चाहता हूँ। गलातियों 2 में अंतिम पद शक्तिशाली है। मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं करता, पौलुस ने लिखा, क्योंकि यदि धार्मिकता व्यवस्था के द्वारा होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।

वह व्यर्थ ही मरा। दोस्तों, मसीह व्यर्थ नहीं मरा। वह इसलिए मरा क्योंकि हमें उसके उद्धार कार्य की आवश्यकता थी, अगर हमें कभी भी उद्धार पाना था।

उद्धार का अर्थ है अपना ध्यान स्वयं से और अपने कर्मों से हटाकर केवल मसीह पर लगाना। रोमियों 4:25. जब परमेश्वर हमें मसीह से जोड़ता है, तो वह हमारे पापों को उसके ऊपर और अपनी धार्मिकता को हमारे ऊपर आरोपित करता है। परमेश्वर ने, उद्धारण, जिसने पाप को नहीं जाना, उसे हमारे लिए पाप बना दिया ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें।

2 कुरिन्थियों 5:21. मसीह की सक्रिय धार्मिकता, उसकी आजीवन आज्ञाकारिता, हमारे लिए गिनी जाती है, जैसे कि उसकी निष्क्रिय आज्ञाकारिता, उसकी पीड़ा भरी आज्ञाकारिता, और क्रूस पर उसकी मृत्यु। यह मसीह की सक्रिय और निष्क्रिय आज्ञाकारिता के बीच एक पारंपरिक अंतर है। पूर्व से, उसका मतलब था कि वह अपने पूरे जीवन में पिता और व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी रहा।

उत्तरार्द्ध से, इसका मतलब कोई निष्क्रियता नहीं है; यहीं पर शब्द ने अपना अर्थ बदल दिया है क्योंकि उसकी निष्क्रिय आज्ञाकारिता का मतलब निष्क्रियता नहीं है, बल्कि यह लैटिन पैसियो से आता है, जो मसीह के जुनून या पीड़ा से संबंधित है। इसलिए, मैं सक्रिय आज्ञाकारिता के लिए उसकी सक्रिय या उसकी आजीवन आज्ञाकारिता, और उसकी पीड़ा भरी आज्ञाकारिता, क्रूस की आज्ञाकारिता के लिए शब्दावली का उपयोग करना पसंद करता हूँ। फिलिप्पियों 2. सक्रिय आज्ञाकारिता, निष्क्रिय आज्ञाकारिता, बेहतर आजीवन आज्ञाकारिता, पीड़ा भरी आज्ञाकारिता।

जैसे एक मनुष्य की अवज्ञा के कारण बहुत से लोग पापी ठहराए गए, रोमियों 5:19, वैसे ही एक मनुष्य की आज्ञाकारिता के कारण बहुत से लोग धर्मी ठहराए जाएँगे, रोमियों 5:19। जब हम उद्धार के लिए केवल मसीह पर भरोसा करते हैं, तो परमेश्वर हमें अपने अनुग्रह में स्वतंत्र रूप से स्वीकार करता है। कुछ लोगों में, हालाँकि हम केवल विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से बचाए जाते हैं, लेकिन उद्धार करने वाला विश्वास कभी अकेला नहीं रहता, क्योंकि मसीह यीशु में, गलातियों 5:6, मसीह यीशु में न तो खतना और न ही खतना रहित होना कुछ भी पूरा करता है। जो मायने रखता है वह है प्रेम के माध्यम से काम करने वाला विश्वास, गलातियों 5:6। परिणामस्वरूप, हम प्रेम करते हैं क्योंकि उसने पहले मसीह में हमसे प्रेम किया, 1 यूहन्ना 4:10। क्योंकि मसीह ने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए अपना जीवन दे दिया, इसलिए हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं, यूहन्ना 15:12 और 13।

औचित्य में प्राप्त अनुग्रह के लिए कृतज्ञता से, हम, उद्धारण, मसीह यीशु में अच्छे कामों के लिए बनाए गए हैं, जिन्हें करने के लिए परमेश्वर ने हमारे लिए समय से पहले तैयार किया है, इफिसियों 2:10। इफिसियों 2 और तीतुस की पुस्तक मेरे दिमाग में ऐसे स्थान के रूप में उभर कर आती है जहाँ शास्त्र जोरदार ढंग से कहता है कि उद्धार कामों से नहीं है, बल्कि यह कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग अच्छे कामों के लिए उत्साही हों। इफिसियों 2:8-10 ने इसे बहुत अच्छी तरह से एक साथ रखा है। क्योंकि अनुग्रह से, तुम विश्वास के द्वारा बचाए गए हो, और यह उद्धार तुम्हारी ओर से नहीं है; यह परमेश्वर का उपहार है, न कि कामों का परिणाम है कि कोई घमंड न करे, क्योंकि हम मसीह यीशु में अच्छे कामों के लिए बनाए गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने पहले से तैयार किया है कि हम उनमें चलें।

इसका अर्थ यह है कि हम पुनः निर्मित हुए हैं, अर्थात् हम उन लोगों के रूप में हैं जो पहले से ही ईश्वर की नई रचना के अंग हैं। यह हमारी ऐतिहासिक टोही है, और यह सामान्य टोही से अधिक

लंबी है। यह उस टोही से अधिक लंबी है जो हम करेंगे, उदाहरण के लिए, विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ ईसाई जीवन पर, हालांकि हम इसे कुछ समय देंगे क्योंकि रोम और सुधार के ऐतिहासिक दृष्टिकोण ईसाई धर्मशास्त्र के लिए महत्वपूर्ण हैं।

औचित्य के व्यवस्थित सूत्रीकरण। बाइबल की प्रस्तावना की समीक्षा करने, औचित्य के लिए बाइबल की प्रस्तावना देने और सिद्धांत के इतिहास की खोज करने के बाद, हम औचित्य के व्यवस्थित सारांश की ओर बढ़ते हैं। उद्धार के अनुप्रयोग की बाइबल की तस्वीरें विभिन्न क्षेत्रों से उत्पन्न होती हैं।

पुकार हमारी इंद्रियों के क्षेत्र से आती है, खास तौर पर सुनने की शक्ति से। पुनर्जन्म मृत्यु और जीवन के क्षेत्र से आता है। पवित्रीकरण अनुष्ठान अशुद्धता और पवित्रता से संबंधित है।

धर्म परिवर्तन से तात्पर्य दिशा में परिवर्तन से है, पश्चाताप से मुड़ना और मसीह के विश्वास की ओर मुड़ना, जैसा कि हमने देखा। औचित्य और गोद लेना दोनों ही कानूनी छवियाँ हैं, हालाँकि न्यायालय के विभिन्न वर्गों से आते हैं। गोद लेना पारिवारिक न्यायालय से आता है, जो ईश्वर को पिता, मसीह को बड़े भाई, कैपिटल बी, और उद्धारक के रूप में प्रस्तुत करता है, और विश्वासियों को ईश्वर के प्रिय बच्चों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिन्हें वह पारिवारिक जीवन के लाभ और जिम्मेदारियाँ देता है।

गोद लेने की तरह औचित्य भी एक कानूनी छवि है, लेकिन यह न्यायालय के एक अलग विभाग, आपराधिक विभाग से संबंधित है। यह एक बड़े बाइबिल कानूनी चित्र का हिस्सा है जो परमेश्वर को एक कानून निर्माता और पूरी पृथ्वी के न्यायाधीश के रूप में चित्रित करता है, जिसके सामने हर व्यक्ति को जवाब देना होगा। पतित मनुष्य उसके सामने दोषी पापियों के रूप में दिखाई देते हैं जिन्होंने अपने निर्माता के खिलाफ विद्रोह किया है और उसके कानून को तोड़ा है।

मसीह व्यवस्था के अधीन उन लोगों को छुड़ाने के लिए पैदा हुआ जो व्यवस्था के अधीन हैं, गलातियों 4:4 और 5. यीशु ने यह कैसे किया? उद्धारण, गलातियों 3:13, मसीह ने हमारे लिए अभिशाप बनकर हमें व्यवस्था के अभिशाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, जो कोई पेड़ पर लटकाया जाता है वह अभिशप्त है। कभी-कभी, पुराने उदारवाद ने बाइबल से इन सभी कानूनी तनावों को हटाने की कोशिश की। यह काम नहीं करता है क्योंकि बाइबल कानूनी शब्दावली से अधिक देती है, लेकिन यह भगवान, मानव जाति, पाप, मसीह, उनके उद्धार कार्य, उद्धार के अनुप्रयोग और अंतिम बात, अंतिम निर्णय को प्रस्तुत करती है; उदाहरण के लिए, इन सभी को कानूनी शब्दों में चित्रित किया गया है।

फिर से, मैं यह कहूँगा: बाइबल इससे ज़्यादा करती है, लेकिन इससे कम नहीं करती। और हाँ, उद्धार का अनुप्रयोग औचित्य से ज़्यादा है, लेकिन औचित्य से कम नहीं है। औचित्य उद्धार के अनुप्रयोग का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू है।

परमेश्वर, जो न्यायकर्ता है, उन सभी को धर्मी घोषित करता है जो उसके पुत्र पर प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करते हैं। अर्थात्, वह उन्हें धर्मी ठहराता है। इस प्रश्न के उत्तर में कि धर्मी ठहराना क्या है? वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेचिज्म इस उद्धारण का उत्तर देता है; धर्मी ठहराना

परमेश्वर की स्वतंत्र कृपा का कार्य है, जिसमें वह हमारे सभी पापों को क्षमा करता है और हमें अपनी दृष्टि में धर्मी के रूप में स्वीकार करता है, केवल मसीह की धार्मिकता के लिए जो हमें सौंपी गई है और केवल विश्वास के द्वारा प्राप्त की गई है।

यह वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेचिज़्म का प्रश्न और उत्तर 33 है। जैसा कि हमने पहले कहा, उद्धार के आवेदन के प्रत्येक पहलू को हमारी ज़रूरत के विरुद्ध देखना सबसे अच्छा है। औचित्य की ज़रूरत निंदा है।

आदम और हव्वा को पतन से पहले धर्मी ठहराए जाने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वे, उद्धारण, सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर की समानता के अनुसार बनाए गए थे, इफिसियों 4:24 ईएसवी। लेकिन पतन के बाद, उन्हें और उनकी सभी संतानों को धर्मी ठहराए जाने की ज़रूरत थी। पौलुस इस ज़रूरत को दो तरीकों से प्रस्तुत करता है।

सबसे पहले, हमें आदम के मूल पाप के कारण मसीह की धार्मिकता की आवश्यकता है। रोमियों 5:18 और 19, एक अपराध ने सभी लोगों की निंदा की। एक आदमी की अवज्ञा से, कई लोग पापी बन गए।

दूसरा, यह रोमियों 5:18 और 19 है। दूसरा, आदम के मूल पाप के अलावा, हम सभी ने वास्तविक पाप किए हैं। रोमियों 3:23, सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।

वास्तव में, यह श्लोक आदम के आदिम अपराध को संदर्भित कर सकता है। अओरिस्ट, हम सभी ने पाप किया है, का अर्थ आदम में हो सकता है। और हमारे वास्तविक पाप, वर्तमान काल, हम सभी परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, जैसा कि जिमी डन ने रोमियों 1 से 8 पर अपनी टिप्पणी में सुझाया है। यह मेरी अपनी समझ थी, हालाँकि हठधर्मिता से नहीं, इससे पहले कि मैं उस क्षेत्र में डन की टिप्पणी पढ़ता।

रोमियों में पौलुस का विकासशील तर्क मसीह में औचित्य के लिए मानवता की सार्वभौमिक आवश्यकता को रेखांकित करता है। पुस्तक के विषय की घोषणा करने के तुरंत बाद, सुसमाचार में परमेश्वर की धार्मिकता का रहस्योद्घाटन, रोमियों 1:16 और 17 में, पौलुस एक अन्य रहस्योद्घाटन, पाप पर परमेश्वर के न्याय के रहस्योद्घाटन का वर्णन करते हुए एक लंबा बयान शुरू करता है। पौलुस कहता है, मैं सुसमाचार से शर्मिंदा नहीं हूँ, क्योंकि यह हर उस व्यक्ति के लिए परमेश्वर की धार्मिकता का रहस्योद्घाटन है जो विश्वास करता है, पहले यहूदी के लिए और फिर यूनानी के लिए भी।

और फिर श्लोक 18 कहता है, परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से उन लोगों की सारी अधर्मता और अधर्म के विरुद्ध प्रकट होता है जो अपने अधर्म से सत्य को दबाते हैं, रोमियों 1:18। पौलुस इस भाग की शुरुआत करता है, 1:18 से 3:20 तक, एक सारांश के साथ जो शुरू होता है, कोई भी धर्मी नहीं है, एक भी नहीं, कोई भी ऐसा नहीं है जो समझता हो, कोई भी ऐसा नहीं है जो परमेश्वर को खोजता हो, रोमियों 3:10 और 11। वह यह कहकर इस भाग को समाप्त करता है कि उनकी आँखों के सामने परमेश्वर का कोई भय नहीं है।

रोमियों 1, 18 से 3:20 तक का लक्ष्य, उद्धारण, ताकि हर मुँह बंद हो जाए और पूरी दुनिया परमेश्वर के न्याय के प्रति उत्तरदायी हो जाए, क्योंकि कोई भी व्यक्ति व्यवस्था के कामों से उसकी दृष्टि में धर्मी नहीं ठहरेगा, क्योंकि पाप का ज्ञान व्यवस्था के द्वारा होता है, रोमियों 3:19 और 20। तो, हमने जो कहा है वह यह है कि धर्मी ठहराए जाने की आवश्यकता निंदा है। रोमियों की पुस्तक में ईसाई शिक्षा के पॉल के महान सारांश में, वह उस आवश्यकता को आधार बनाता है। वह उस आवश्यकता को दो चीजों पर आधारित करता है।

सबसे पहले, रोमियों 1:18 से 3:20 तक के वास्तविक पाप। और फिर अध्याय 5, आयत 12 से 19 में आदम के मूल पाप। पौलुस की रणनीति चतुराईपूर्ण है।

इससे पहले कि हम परमेश्वर के उद्धार के शुभ समाचार को स्वीकार करें, हमें बुरी खबर को समझना चाहिए, जैसा कि लूथर ने कहा, हमारे पाप और उसके लिए क्या उचित है: एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर का क्रोध। पौलुस पाप और न्याय को अपने आप में अंत के रूप में नहीं बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की तैयारी के रूप में प्रस्तुत करता है। हममें से प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की नज़र में दोषी है, खुद को बचाने में असमर्थ है, और इसलिए उसे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है।

यदि औचित्य की आवश्यकता दण्ड है, तो औचित्य का स्रोत परमेश्वर का अनुग्रह है। पौलुस आदम के पाप और मसीह की धार्मिकता को एक साथ रखता है। रोमियों 5, 17.

क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक मनुष्य के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धार्मिकता के वरदान को प्राप्त करते हैं, वे एक मनुष्य, यीशु मसीह के द्वारा जीवन में कितना अधिक राज्य करेंगे? रोमियों 5, 17. पौलुस आदम के पाप से शुरू हुई मृत्यु के राज्य की तुलना मसीह द्वारा लाए गए जीवन के राज्य से करता है। प्रेरित दो आदमों और उनके लोगों पर उनके प्रभाव के बीच संतुलन को बिगाड़ देता है, मसीह के माध्यम से राज्य करने वाले जीवन के बारे में नहीं बल्कि उन लोगों के बारे में लिखकर जो उसके माध्यम से राज्य करेंगे।

आदम के पाप के हानिकारक प्रभावों से कहीं अधिक, मसीह का उद्धार कार्य अनुग्रह और धार्मिकता के उपहार की अधिकता उत्पन्न करता है, जो उसके लोगों को अनंत जीवन में राज्य करने का कारण बनता है। डगलस मू सही कहते हैं कि यहाँ धार्मिकता स्पष्ट रूप से ईश्वर के साथ एक नए रिश्ते की स्थिति है। डग मू, *द एपिस्टल टू द रोमन्स*, न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री ऑन द न्यू टेस्टामेंट, पृष्ठ 339।

रोमियों पर मेरी पसंदीदा टिप्पणी, और वह कुछ कह रही है। बहुत सी अच्छी टिप्पणियाँ हैं। यह यीशु में परमेश्वर के अनुग्रह की अधिकता से धर्मी ठहराए गए लोगों की स्थिति है।

इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पवित्रशास्त्र अनुग्रह और औचित्य को एक साथ जोड़ता है। रोमियों 3, 24. वे मसीह यीशु में छुटकारे के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से संतमंत धर्मी ठहराए जाते हैं।

या तीतुस 3:6 और 7. परमेश्वर ने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अपनी आत्मा भरपूर मात्रा में उंडेली है ताकि हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर अनन्त जीवन की आशा के साथ वारिस बन सकें। तीतुस 3, 6 और 7. पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है। परमेश्वर के लोगों के धर्मी ठहराए जाने का अंतिम स्रोत उसका अतुलनीय अनुग्रह है।

लूथर ने इसे खूबसूरती से समझाया है। अपने भले की तलाश करने के बजाय, परमेश्वर का प्रेम बहता है और भलाई प्रदान करता है। इसलिए, पापी आकर्षक होते हैं क्योंकि उनसे प्रेम किया जाता है।

उन्हें इसलिए प्यार नहीं किया जाता क्योंकि वे आकर्षक हैं। इस प्रकार, मसीह कहते हैं, क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं बल्कि पापियों को बुलाने आया हूँ, मत्ती 9:13। यह क्रूस का प्रेम है, जो क्रूस से पैदा हुआ है, जो उस दिशा में मुड़ता है जहाँ उसे अच्छाई नहीं मिलती, जिसका वह आनंद ले सकता है, लेकिन जहाँ वह बुरे और ज़रूरतमंद व्यक्ति को अच्छाई प्रदान कर सकता है।

लूथर के कार्य, खंड 31, पृष्ठ 57. हमारे अगले व्याख्यान में, हम प्रभु यीशु मसीह के उद्धार कार्य में औचित्य के आधार पर चर्चा करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा उद्धार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 13, औचित्य, संख्या 2, ऐतिहासिक पुनरावलोकन और व्यवस्थित सूत्रीकरण है।